आज की अव्यक्त मुरली का सार ---------- Date: 27-07-14

आज की अव्यक्त मुरली में बाबा ने हम बच्चों को एक विशेष दैवी-गुण - सन्तुष्टता को स्पष्ट किया हैं.

क्या हैं सन्तुष्टता?

सबसे विशेष दैवी-गुण, जो चेहरे से चमके वह सन्तुष्टता हैं.

हमारे में कितने प्रकार की सन्तुष्टता चाहिए?

हमारे में तीन प्रकार से सन्तुष्टता चाहिए. एक - बाप से सन्तुष्ट. दूसरा - सदा अपने आप से सन्तुष्ट. तीसरा - सर्व सम्बन्ध और सम्पर्क से सन्तुष्ट. इसमें चैतन्य आत्माये और प्रकृति दोनों आ जाते हैं.

सन्तुष्टता धारण की हुई आत्मा की निशानी क्या हैं? और इसे धारण करने से क्या फल मिलता हैं?

सन्तुष्टता धारण की हुई आत्मा की निशानी, उसमें प्रत्यक्ष रूप में प्रसन्नता दिखाई देगी. ऐसी आत्मा सदा प्रसन्नचित रहेंगी.

इस प्रसन्नता के आधार पर प्रत्यक्ष फल ऐसी आत्मा की सदा स्वतः ही सर्व से प्रशन्सा होगी.

अभी हमें अपने आपको चेक करना हैं, हम कितने सन्तुष्ट रहते हैं?

चेक करें हमारे सम्बन्ध-सम्पर्क में आनेवाली आत्माये हमारी प्रशन्सा करती है, अगर हमारी प्रशन्सा नहीं करती तो हम अन्दर से प्रसन्न नहीं रहते क्योंकि हमें अपने ब्राह्मण जीवन में कोई बात से असन्तुष्टता हैं.

असन्तुष्टता का कारण क्या हो सकता हैं?

बाबा कहते है जब हम ब्राह्मण जीवन में आगे बढ़ने का लक्ष्य करते हैं तो हमें परीक्षाओं और समस्याओं का सामना करना होता हैं. अपनी मंजिल के रास्ते पर चलते हुए, आसपास के नजारे देखते हुए, मनोरंजन में रह कर, वाह नजारा वाह का गायन करते पार करते चलना हैं. इसकी जगह बच्चे नजारों को देख यह क्यों, यह क्या, यह ऐसे नहीं - यह वैसे नहीं, इन बातों में रुक जाते हैं और नजारों को ठीक करने में लग जाते हैं इसके कारण बाबा से कनेक्शन लूज हो जाता हैं. फिर बच्चे थक जाते हैं और थकने के कारण बाप को मीठे-मीठे उल्हनें देते हुए रॉयल रूपमें बाप से भी असन्तुष्ट हो जाते हैं. अपनी कमजोरी के कारण बच्चों को सहज मार्ग भी सहन करने का मार्ग लगता हैं और समस्यायें आने के कारण का ज्ञान न होने के कारण आगे बढ़ने के सुख के अनुभव के बजाए सहन करने का अनुभव करते हैं. ऐसे बच्चे बाप से अर्थात बाप के ज्ञान से वा ज्ञान के धारणा मार्ग से असन्तुष्ट रहते हैं. साथ-साथ स्वयं से भी असन्तुष्ट रहते हैं - स्वयं से असन्तुष्ट तो सर्व के सम्बन्ध और सम्पर्क से भी असन्तुष्ट. इस कारण सदा प्रसन्न अर्थात सदा खुशी नहीं रहती.

बाबा ने कहा, असन्तुष्ट रहने के कारण, इस पुरुषोत्तम संगमयुग का विशेष खजाना अतीन्द्रिय सुख का अनुभव नहीं कर पाते हो.

अब क्या करना हैं?

सदा प्रसन्न रहो और सदा सर्व को प्रसन्न करो, तो हमारी प्रशन्सा भी सब करेंगे.
ॐ शांति.

Please provide your feedback to Atma Bhai on email: a.brahmin.soul@gmail.com .